



रत्ना सिंह, 2. प्रोफेसर. ललित
कुमार सिंह

सुधा अरोड़ा के कहानियों में मध्यमवर्गीय स्त्री का संघर्ष और शहरी जीवन की विसंगतियाँ

शोध अध्ययनी, 2. अध्यक्ष, हिन्दी विभाग, म.गौ.वि.ग्रा.वि.वि.चित्रकूट, सतना (मोप्र0) भारत

Received-02.09.2025,

Revised-10.09.2025,

Accepted-16.09.2025

E-mail : aaryavart2013@gmail.com

सारांश: सुधा अरोड़ा की कहानियाँ मध्यमवर्गीय समाज और शहरी जीवन के यथार्थ को अत्यंत संवेदनशीलता के साथ प्रस्तुत करती हैं। इनकी कहानियों का केन्द्र मध्यमवर्ग है, जो आर्थिक रूप से सीमित होते हुए भी सामाजिक प्रतिष्ठा, सुविधाओं और आधुनिक जीवन शैली की आकांक्षाओं से घिरा हुआ है। यह वर्ग निरंतर दबाव, तनाव और असुरक्षा से जीवन जीता है। सुधा अरोड़ा की कहानियों में मध्यमवर्गीय स्त्री जो कि शिक्षा एवं रोजगार से जुड़ी हुई है, इसके पश्चात् भी वह घरेलू जिम्मेदारियों एवं समाज की अपेक्षा और परिवारिक दबाव से मुक्त नहीं हो सकती, जबकि वह घर एवं बाहर दोनों जगह पर संघर्ष करती है। यह जानने के पश्चात् भी उसके श्रम के साथ-साथ उसकी भावनाओं को अनदेखा किया जाता है जबकि दूसरी ओर शहरी जीवन की तेज रफ्तार, बढ़ती महंगाई और प्रतिस्पर्धा ने मानवीय जीवन को कठिन बना दिया है। सुधा अरोड़ा की कहानियों में सम्बंधों की दूरी, संवाद की कमी और अकेलेपन की भावना स्पष्ट दिखाई देती है। लोग एक ही घर में रहते हुए भी भावनात्मक रूप से एक-दूसरे से दूर होते जा रहे हैं। इस प्रकार इनकी कहानियों में मध्यमवर्गीय स्त्री और शहरी जीवन का यथार्थ चित्र देखने को मिलता है।

कुंजीभूत शब्द— मध्यमवर्गीय, स्त्री, संघर्ष, कहानी, शहरी जीवन, शहरी विसंगतियाँ, सजीव रूप, भावनात्मक रूप, प्रतिस्पर्धा, संवाद।

सुधा अरोड़ा हिंदी की प्रसिद्ध कहानीकार हैं, जिन्होंने अपनी कहानियों में स्त्री के संघर्ष दर्द और जीवन की सच्चाई को बहुत ही सजीव रूप में दिखाया है। इन्होंने विशेषकर मध्यमवर्गीय स्त्रियों को जो न तो पूर्णतः पारंपरिक हैं, न पूरी तरह आधुनिक इनके कथा संसार की प्रमुख पात्र हैं। इस शोध पत्र में सुधा अरोड़ा की कहानियों में यह समझने की कोशिश की जाएगी कि मध्यमवर्गीय स्त्री किस तरह संघर्ष करती है, उसे किन परिस्थितियों का सामना करना पड़ता है, और शहरी जीवन उसकी परिस्थितियों को कैसे और बढ़ा देता है।

सुधा अरोड़ा की कहानियों में मध्यमवर्गीय स्त्री हमेशा संघर्ष करती हुई दिखाई देती है। उसका संघर्ष केवल बाहर की दुनिया से नहीं है, बल्कि अपने घर, परिवार समाज और खुद के भीतर चल रहे द्वंद्व से भी है। मध्यमवर्गीय स्त्री को घर की जिम्मेदारियों निभानी होती है, लेकिन उसकी मेहनत और भावनाओं को अक्सर कोई महत्व नहीं मिलता।

इनकी कहानियों में 'यह जो औरत है', रहोगी तुम वहीं, दहेज हत्यारे, अकेली और अवकाश के बाद जैसी रचनाएँ विशेष रूप से मध्यमवर्गीय स्त्री के जीवन की गहन पड़ताल करती हैं। इन कहानियों में स्त्री की मानसिक पीड़ा, आत्मसम्मान की खोज और सामाजिक दबावों से मुक्त होने का प्रयत्न बार-बार उभरकर आता है। कहानी 'रहोगी तुम वहीं' में नायिका का संवाद—'तुम बदल गए, पर मैं वही क्यों रहूँ'—स्त्री के आत्मबोध और आत्मस्वीकृति का सशक्त उद्घोष है। सुधा अरोड़ा की नायिकाएँ बाहर से मजबूत दिखती हैं, लेकिन अंदर से वे भावनात्मक अकेलेपन से जूझती हैं। कहानी 'अकेली' में नायिका शहर में रहकर स्वतंत्र तो है, पर दिल से बहुत अकेली। यह बताता है कि आज की आधुनिक स्त्री के पास सब कुछ होते हुए भी उसे सच्चे सम्बंधों की कमी महसूस होती है। मध्यमवर्गीय स्त्री परंपराओं को भी निभाना चाहती है, लेकिन साथ ही अपने विचारों और सपनों को भी जीना चाहती है। सुधा अरोड़ा ने दिखाया है कि यह दोनों दुनिया—परम्परा और आधुनिकता उसे उलझा देती है। इस बीच वह अपनी राह खुद बनाना चाहती है। यह संघर्ष केवल पुरुष-प्रधान समाज में टकराव नहीं है—बल्कि उस मानसिकता से भी है जो स्त्री को सदियों से 'त्यागमयी' और ममत्वमयी के रूप में ही देखती रही है—चाहे वह वैवाहिक जीवन को समाप्त करने का निर्णय हो या अपनी स्वतंत्र पहचान गढ़ने का।

समाज में औरत से आज भी दोहरी उम्मीदें रखी जाती हैं। अगर वह घर संभाले तो "आदर्श नारी" कहलाती है। और अगर अपने लिए कुछ करना चाहे, तो "स्वाधीन" या आधुनिक कह दी जाती है। कई कहानियों में लेखिका ने दिखाया है कि शहर की कामकाजी स्त्री बाहर जाकर पैसा तो कमा लेती है, पर उसे आर्थिक स्वतंत्रता के साथ सम्मान नहीं मिलता। घर में अब भी पुरुष निर्णय लेते हैं, ऐसे में स्त्री खुद के फैसले लेने की आजादी के लिए भी संघर्ष करती है। वह केवल अपने अधिकारों के लिए नहीं, बल्कि अपनी पहचान, आत्मसम्मान और मानसिक शांति के लिए लड़ रही है। वह यह समझ चुकी है कि "चुप रहना" अब कोई समाधान नहीं है। अब वह बोलना, सवाल करना और अपने लिए जीना जानती है। यही संघर्ष उसकी ताकत बन जाता है।

शहरी जीवन की विसंगतियाँ— सुधा अरोड़ा की कहानियाँ ज्यादातर शहरी जीवन पर आधारित हैं। उन्होंने बड़े शहरों के उस चेहरे को दिखाया है। जहाँ बाहर से सब कुछ चमकदार और आधुनिक लगता है, लेकिन अंदर बहुत सी विसंगतियाँ छिपी होती हैं। इन विसंगतियों का असर सबसे ज्यादा मध्यमवर्गीय स्त्रियों पर पड़ता है। शहरी जीवन में रिश्ते अब पहले जैसे सच्चे और गहरे नहीं रहे। पति-पत्नी के बीच भी दूर आ गई है। हर कोई अपने कैरियर, अपने सपनों और अपनी सुविधाओं में इतना उलझ गया है कि दूसरों के लिए समय नहीं बचा। सुधा अरोड़ा ने अपनी कई कहानियों में यह दिखाया है कि आधुनिक जीवनशैली ने मनुष्यता और संवेदना को कम कर दिया है।

शहरों में लोगों के बीच प्रतिस्पर्धा और दिखावे की भावना बहुत बढ़ गई है। हर कोई दूसरों से आगे निकलना चाहता है। सुधा अरोड़ा की कहानियाँ बताती हैं कि इस माहौल में इंसान की सच्ची भावनाएँ खो जाती हैं। औरतें भी समाज के दबाव में रहकर अपनी असली इच्छाओं को दबा देती हैं—ताकि सभ्य और सफल दिख सकें। शहर की स्त्री अपने ही घर में मेहमान बना कर रह गई है, न उसे संवाद का समय मिलता है, न स्नेह का स्पर्श। यह विसंगति आधुनिकता की देन है, जहाँ सुविधाएँ बढ़ी हैं, पर मनुष्यता घटती जा रही है।

शहर की मध्यमवर्गीय स्त्रियाँ काम तो करती हैं, लेकिन घर की जिम्मेदारी भी वही उठाती हैं। कहानी 'अवकाश के बाद' में एक शिक्षिका के माध्यम से दिखाया गया है कि नौकरी करने के बावजूद उसे घर के सारे काम संभालने पड़ते हैं। वह दिनभर काम करके थक जाती है, पर परिवार उसे केवल "कर्तव्य निभाने वाली" समझता है, उसके मन की थकान और भावनाएँ कोई नहीं समझता।

अनुरूपी लेखक/ संयुक्त लेखक

ASVP PIF-9. 805 /ASVS Reg. No. AZM 561/2013-14



शहरी जीवन में लोगों के पास समय का अभाव है भावनाओं की जगह तनाव, थकान और असुरक्षा ने ले ली है। मध्यमवर्गीय स्त्री के लिए यह स्थिति और कठिन हो जाती है, क्योंकि उसे हर जगह संतुलन बनाकर चलना पड़ता है—घर, आफिस और समाज में। इससे उसके मन में लगातार दबाव और तनाव बना रहता है, जो कई बार उसे टूटने की कगार पर ले आता है।

सुधा अरोड़ा ने बहुत संवेदनशीलता के साथ यह दिखाया है कि शहरी जीवन भले ही सुविधाओं से भरा हो, लेकिन उसमें अपनापन, भावनाएँ और संतुलन की कमी है। इस माहौल में मध्यमवर्गीय स्त्री सबसे ज्यादा पीड़ित होती है—क्योंकि उसे घर और बाहर दोनों जगह अपनी पहचान बनाए रखने की लड़ाई लड़नी पड़ती है।

इनकी कहानियाँ हमें यह सोचने पर मजबूर करती हैं कि आधुनिकता और प्रगति के बीच कहीं हम मानवीय रिश्तों की गर्मी तो नहीं खो रहे हैं?

निष्कर्ष— सुधा अरोड़ा की कहानियाँ हमारे समाज और खासकर मध्यमवर्गीय स्त्री के जीवन की सच्चाई पेश करती हैं। उन्होंने बहुत सादगी और गहराई से दिखाया है कि एक आम शहरी स्त्री किस तरह हर दिन अपने अस्तित्व और सम्मान के लिए संघर्ष करती है।

मध्यमवर्गीय स्त्री का संघर्ष केवल आर्थिक या पारिवारिक नहीं है वह अपने अस्तित्व, आत्मसम्मान और स्वतंत्र सोच के लिए भी लड़ रही है। वह अब चुप रहने वाली नहीं रही, वह बोलना, सवाल करना और अपने फैसले खुद लेना सीख चुकी है।

संदर्भ ग्रन्थ सूची

1. सुधा अरोड़ा, यही कहीं था घर (उपन्यास) वाणी प्रकाशन, 2012
2. सुधा अरोड़ा, महिला कहानी संग्रह
3. सुधा अरोड़ा, रहोगी तुम वही, राजकमल प्रकाशन, 2008
4. सुधा अरोड़ा, एक औरत की नोटबुक, राजकमल प्रकाशन, 2015
5. wikipedia contributors, sudha arora wikipedia, the free encyclopedia.
